वचन कहता है "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, ओर जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। वह वचन देहधारी हुई और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यहुन्ना १:१, १४) और वह वचन यीशु नाम लेकर हमारे बिच मे वास किया और उसका जन्म एक कुवांरी से हुआ, क्योंकि कोई भी धर्मी नहीं। (रोमियों ३:१०) लेकिन जैसा भविष्यवाणी हुआ था, कि पाप से छुटकारा परमेश्वर के खुन के द्वारा, इसलिए लोगों ने उसे क्रुस की सजा सुनाई। हम बुरा सोचते है, इसलिए लोगों ने उसे सीर पर काँटो का मूकुट पहनाया । हम बुरा करते है, इसलिए उसके हाथों को किलो से टोका गया, हम बुरा करने जाते है, इसलिए उसके पैरों पर किल टोका गया। उसने हमारे गुनाहों का बोझ अपने कंधो पर उठा लिया। पर उन्होंने तीसरे दिन मृत्यु को जय किया तथा चालिस दिन पृथ्वी पर रहे और फिर स्वर्ग उठा लिये गऐ।

यीशु मसीहा आज भी जीवित हैं। वह इस संसार के अंत में फिर आयेंगे। सावधान !!! क्योंकि मसीहा के नाम से कई कहेंगे, हम मसीहा है और धोखा देंगे। पर याद रहे, इस बार जब मसीहा आऐगे, तब वह हमे पाप से क्षमा देने नहीं, वरन, न्याय करने आऐंगे। उस दिन को कोई जानता नहीं है। पूरा संसार उसे बादलों में आते देखेंगे। उस दिन लोग अपने पापों में मस्त होंगे। उस दिन सूर्य, चांद, तारे सब भयंकर गर्जनों के साथ अंधकार में खो जाएंगे। तब मरे हुए जी उठेंगे और न्याय सिंहासन के सामने खड़े किए जाएंगे। चाहे अमीर हो या गरीब, छोटे हो या बड़े सब का न्याय उनके कामों के अनुसार होगा। उस दिन उनका सोना, चांदी या उनका धन कुछ काम नहीं आऐगा। जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में नहीं मिलेगा, वह आग की झील मे हमेशा के लिए डाल दिया जाएगा। इस लिए परमेश्वर का भय मानो जो आत्मा और शरीर दोनो को नरक में नाश कर सकता है।पर जो पृथ्वी पर रहते हुए यीशु पर विश्वास करते थे, वे अपनी विश्वास के द्वारा पवित्र ठहराऐ जा चुके है और वे परमेश्वर के साथ रहेंगे। फिर न मृत्यु, न विलाप, न रोग रहेगी। सब नया होगा।

वचन कहता है, "तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते है, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरे, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करुंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।" (इतिहास ७:१४)

प्रिय पाठको, हम और आप पैदा होने के पूर्व कुछ भी लिखा नहीं गया , लेकिन जो क्रुस पर हमारे पापों के लिए मरा, और तीसरे दिन जी उठा, पृथ्वी के उत्पत्ति से पहले और उनके बलिदान तक सारे पुस्तक में लिखी गई हैं।

ध्यान दे, हमें लगता है की हम ही अपने जीवन को नियंत्रण करते हैं। लेकिन परमेश्वर कहता है " आज ही चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे" केवल परमेश्वर के पास ही जीवन तथा मृत्यु का नियंत्रण है।

मृत्यु के बाद आपकी अत्मा या तो स्वर्ग या नरक जाएगी। नरक एक इतना भयावह स्थान है जहाँ सताव असहनीय दर्द तथा अनंत दुख है। आत्मा सदैव जीवित रहती है। जो सोचते है कि नरक पृथ्वी पर हैं, वे सही है। नरक पृथ्वी के भीतर, इसके केन्द्र मे ही है। वहाँ कोई शान्ति और कोई विश्राम नहीं। याद रखना, प्रेम सबसे महत्त्वपूर्ण है। एक दूसरे को हमेशा क्षमा करना। यदि आप सच्चाई को न माने और जीवित परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीहा के क्रुस पर हुए बलिदान को तुच्छ जाने तो आपका भाग भी उसी झील में होगा। आज आपको मौका मिला है, ध्यान से सुनो। नरक तो शैतान और उसके दूतों के लिए बनाया गया है। लेकिन शैतान लोगो को धोखा देता है कि वे उसके पीछे चलें। शैतान परमेश्वर का रुप लेकर, परमेश्वर का वचन कहकर, परमेश्वर के मंदिर मे बैठकर लोगों को धोखा दिलाता है। (परमेश्वर का मंदिर- हमारा दिल है।)

वचन कहता है- "मैं परमेश्वर मन को खोजता और हृदय को जाँचता हूँ ताकि प्रत्येक जन को उसकी चाल-चलन के अनुसार अर्थात् उसके कामों का फल दूँ।" (यर्मयाह १७:१०)

इसलिए व्यभिचार मत करो। नशीली पदार्थो तथा सेक्स सम्बधी पापों से बिल्कुल दूर रहिए। यदि आप यीशु के पास आकर शराब से आजाद होने का निवेदन करें तो वह आपकी सुनकर सहायता करेगा।

इस संसार मे जो कुछ भी है, सब नष्ट हो जाएगा, लेकिन मेरा वचन कभी भी नष्ट नहीं होगा। मैं कल और आज और युगानुयुग एक सा हूँ। (इब्रानियों १३:८)

प्रिय पाठको, इस बात को सुनिश्चित कर लीजिए कि आपका नाम जीवन की पुस्तक में अंकित है। शैतान चाहता है कि वह हमे धोखे में अनन्त मृत्यु की ओर ले चले, पर जब हम प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र और पापियों का उद्धारकर्ता मानकर दिल मे विश्वास करते है, तब हमारा नाम जीवन की पुस्तक पर लिख दिया जाता है। पाप के कारण सभी का नाम मृत्यु के पुस्तक मे लिखा हुआ होता है, पर यीशु को विश्वास करने पर वह हमारा नाम मृत्यु के पुस्तक से काटकर जीवन की पुस्तक मे लिख देते है।

किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सके। केवल यीशु मसीहा के द्वारा ही उद्धार है। (प्रेरित ४:१२)

परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश करने के लिए नया जन्म लेना जरुरी है। पर जिसने नया जन्म नहीं लिया अर्थात